डा. अर्जुन चव्हाण
(एम्.ए.,बी.एड्.,पीएच्.डी.)
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416004

संस्तुति

मैं संस्तुति करता हूँ कि ''धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' और रत्नाकर मतकरी के 'आरण्यक' नाटक का तुलनात्मक अध्ययन'' इस लघु शोध-प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

स्थान : कोल्हापुर

तिथि : 28 JUN 2000

(डा. अर्जुन चव्हाण)
अध्यक्ष
हिंदी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर ४१६००४

डॉ. मोहन जाधव
एम्.ए.(हिंदी),एम्.ए.(मराठी),बी.एड., पीएच्.डी.
अधिव्याख्याता, हिंदी विभाग,
कर्मवीर माऊराव पाटील महाविद्यालय,
पंढरपुर।

प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि श्री. सौदागर मच्छिंद्र साळुंखे ने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम्.फिल्. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध "धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' और रत्नाकर मतकरी के 'आरण्यक' नाटक का तुलनात्मक अध्ययन" मेरे मार्गदर्शन में पूरा किया है। यह उनकी मौलिक रचना है। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। प्रस्तुत शोध कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

स्थान : कोल्हापुर।

तिथि : 28/6/2000

शोध निर्देशक

मोहन जाधव

(डॉ. मोहन जाधव)

प्रख्यापन

यह लघु शोध-प्रबंध मेरी सर्वथा मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल. (हिंदी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस या अन्य किसी विश्वविद्याळय में किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

स्थान : कोल्हापुर.

तिथि : 2 8 / 8 / ...

शोध-छात्र

(सौदागर मच्छिंद्र साळुंखे)

प्राक्कथन

नाटक एवं रंगमंच के प्रति आकर्षण मराठी भाषी लोगों की विशेषता है। महाविद्यालयीन जीवन से ही नाटकों में कुछ भूमिकाएँ करने के पश्चात् नाट्य विधा के अध्ययन में मेरी रूचि बढ़ती गई। इसी बीच 'तुलनात्मक अनुसंधान के विविध आयाम' नामक शोध आलेख पढ़ने में आया। उक्त आलेख के लेखक डा. निशिकांत मिरजकर (अध्यक्ष, आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली) ने तुलनात्मक अनुसंधान के विविध पहलू तथा दिशाएँ स्पष्ट की हैं। उन्होंने लिखा है कि धर्मवीर भारती का 'अंधायुग' और रत्नाकर मतकरी का 'आरण्यक' नाटकों का तुलनात्मक अनुसंधान हो सकता है। दोनों नाटक महाभारत के युद्धोत्तर कालखंड़ पर ही आधारित है। महाभारत जैसी पौराणिक कथा की पृष्ठभूमि से जुड़े हुए 'अंधायुग' और 'आरण्यक' नाटक का अन्वेषण किया जा सकता है। इस प्रकार एम्. फिल्. के लघु शोध-प्रबंध के विषय का चुनाव हो गया। विवेच्य नाटकों के प्रेरणास्त्रोत का पता लगाते समय स्पष्ट हुआ कि महाभारत पर आधारित इन साहित्यकृतियों पर इरावती कर्वे के 'युगांत' का प्रभाव है। धर्मवीर भारती भी 'युगांत' के प्रभाव को मानते थे और रत्नाकर मतकरी 'अंधायुग' के प्रभाव को। अतः 'अंधायुग' और 'आरण्यक' नाटकों जैसी साहित्य कृतियों पर तुलनात्मक अध्ययन करना निश्चित हुआ।

शोध निर्देशक डॉ. एम्. पी. जाधव जी के मार्गदर्शन में मेरा अनुसंधान आरंभ हुआ। धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' पर दिल्ली विश्वविद्यालय में 'अंधायुग एक सृजनात्मक उपलब्धि' रमेश गौतम ने एवं औरंगाबाद के डा. बाबासाहब आंबेडकर, मराठवाडा विश्वविद्यालय में साधना गांधी ने 'भारती का अंधायुग' विषय पर एम्. फिल्. का लघु शोध-प्रबंध प्रस्तुत किया है। डा. पुष्पा वास्कर ने 'धर्मवीर भारती : व्यक्ति और साहित्यकार' विषय पर पीएच्. डी. उपाधि प्राप्त की है। पुणे विश्वविद्यालय में सुनीता कुलकर्णी ने 'नाटककार रत्नाकर मतकरी (एक चिकित्सक अभ्यास)' विषय पर एम्. फिल्. का लघु शोध प्रबंध फरवरी, 1985 में प्रस्तुत किया है। उक्त प्रबंध में 'आरण्यक' नाटक का विश्लेषण किया गया है। शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर में श्रीमती कुमुदिनी मेंडा ने 'काव्य नाटक में भाषा सौंदर्य 'अंधाकुआ' और 'अंधायुग' के परिप्रेक्ष्य में' इस विषय पर एम्. फिल. का लघु शोध-प्रबंध सन् 1997 में प्रस्तुत किया है। जहाँ तक मेरी जानकारी है, अभी तक उक्त दोनों नाटकों का

तुलनात्मक अनुसंधान आज तक नहीं हुआ है। अत: धर्मवीर भारती के 'अंधायुग' और रत्नाकर मतकरी के 'आरण्यक' नाटक का तुलनात्मक अध्ययन इस विषय पर अनुसंधान आवश्यक था। इस से दो भाषी नाटकों में व्यक्त मौलिक प्रवृत्तियाँ समान रूप से मिल सकती हैं या उसमें वैषम्य भी हो सकता है। तुलनात्मक अनुसंधान करके उक्त नाटकों की विशेषताओं पर प्रकाश डालने का मेरा विनम्र प्रयास रहा है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध पाँच अध्यायों में विभाजित है -

प्रथम अध्याय - भारती और मतकरी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व -

द्वैभाषिक साहित्यकारों के साहित्य कृतियों पर तुलनात्मक अनुसंधान करना मेरा प्रयोजन रहा है। इसलिए प्रस्तुत अध्याय में उन दो साहित्यकारों के साहित्य जीवनी पर प्रकाश डाला गया है, जो अपने-अपने साहित्य के क्षेत्र में चर्चित रहे हैं। ऐसे हिंदी साहित्य में 'अंधायुग' कृति की अन्यान्य विशेषताओं की वजह से ह्मेशा चर्चित रहनेवाले आधुनिक साहित्यकारों में से एक डा. धर्मवीर भारती और मराठी साहित्य को अन्यान्य नाटकों के माध्यम से एक अनोखा साहित्यांग देनेवाले विवादास्पद नाटककार रत्नाकर मतकरी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए निष्कर्ष रूप में इन कृतियों के निर्माण की प्रेरणा और मेरे अनुसंधान का प्रयोजन विश्लेषित किया गया है।

द्वितीय अध्याय - 'अंधायुग' और 'आरण्यक' की विषयवस्तु का तुलनात्मक अध्ययन -

आलोच्य दोनों कृतियाँ गीति नाट्य हैं यह तो स्पष्ट ही है। इसलिए प्रस्तुत अध्याय में मैंने सैद्धांतिक दृष्टि से गीतिनाट्य की कथावस्तु पर प्रकाश डालते हुए महाभारत जैसे पौराणिक पृष्ठभूमि के आधार पर लिखे गए आलोच्य नाटकों की कथावस्तु संक्षेप में दी है। इसके बाद इनकी पौराणिकता एवं इनके घटनाएँ एवं प्रसंगों में पाई जानेवाली समानता को दिखाते हुए उनके सूक्ष्म भेदों की चर्चा स्पष्ट रूप में की गई है। साथ ही निष्कर्ष में इन समान घटनाएँ एवं प्रसंगों के सूक्ष्म भेद एवं उनका संक्षेप में विश्लेषण किया है।

तृतीय अध्याय- 'अंधायुग' और 'आरण्यक' में चित्रित चरित्र-चित्रण का तुलनात्मक अध्ययन।

प्रस्तुत अध्याय में गीतिनाट्य के पात्रों की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए आलोच्य नाटकों में चित्रित महाभारत कालीन पात्रों के साथ-साथ नाटककारों द्वारा निर्मित पूर्णत: कल्पित पात्रों

पर विचार विश्लेषण किया गया है। इसके बाद आलोच्य महाभारत कालीन नाटकों में से पौराणिक, कल्पित समान पात्रों को गीतिनाट्य के पात्रों की विशेषताओं पर कसते हुए इनके स्वभाव विशेषताओं को परखते-परखते सूक्ष्म भेदों की चर्चा विस्तारित रूप से की है। बाद में महत्त्वपूर्ण, सहयोगी किंतु असमान पात्रों का संक्षेप में साधारण तौर पर विश्लेषण किया गया है। और निष्कर्ष रूप में सभी समान, असमान, कल्पित पात्रों के संक्षेप में चरित्र उद्घाटित किए हैं।

चतुर्थ अध्याय - 'अंधायुग' और 'आरण्यक' में चित्रित संवादों का तुलनात्मक अध्ययन।

आलोच्य दोनों कृतियों को सफलता से मंचीत एवं रेड़िओ रूपक दोनों रूपों में सफलता का प्रमुख आधार इनके लयबद्ध संवाद ही रहे हैं। इसलिए इनके काव्यमय संवादों पर चर्चा करना आवश्यक ही था। इसलिए प्रस्तुत अध्याय में नाटक में संवादों का महत्त्व बताते हुए गीतिनाट्य के संवादों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही इनके काव्यमय लयबद्ध संवादों के गुण विशेष और नाटकों में इनका महत्त्व आदि बातों पर विचार विश्लेषित करते हुए, संवादों के महत्त्वपूर्ण गुण-विशेषताओं के आधार पर इनका तुलनात्मक अध्ययन करके निष्कर्ष रूप में आलोच्य नाटकों में पाए जानेवाले समाज गुण विशेषताओं के संवादों को कैसे उपयोग में लाया गया है आदि बातों पर विचार किया गया है।

पंचम अध्याय - 'अंधायुग' और 'आरण्यक' नाटक की रंगमंचीयता का तुलनात्मक अध्ययन -

आलोच्य दोनों नाटक पौराणिक गीतिनाट्य होकर भी सफल रूप से मंच पर मंचीत हुए हैं और अभी भी हो रहे हैं। इसलिए प्रस्तुत अध्याय में इन गीतिनाट्यों की इस मंचीय सफलता के एक-एक रहस्य पहलूओं को स्पष्ट रूप में उद्घाटित करने के लिए रंगमंच और नाटक का संबंध आदि बातों पर विचार विश्लेषित किया गया है। ताकि आलोच्य नाटकों के मंचन सामर्थ्य की बातें स्पष्ट हो। इनका सफल मंचन करने के लिए खड़ी होनेवाली समस्याओं की चर्चा की गई है और निष्कर्ष दिए हैं।

उपसंहार -

विवेच्य नाटकों के तुलनात्मक निष्कर्ष संक्षेप में प्रस्तुत अध्याय में दिए गए हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची -

इसके अंतर्गत समीक्षा ग्रंथो की सूची दी है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की संपन्नता का पूरा श्रेय मैं मेरे आदरणीय गुरूवर्य प्रा. डा. एम्. पी. जाधव सर को देना चाहुँगा। इन्होंने अपना अनमोल मार्गदर्शन देकर इस लघु शोध-प्रबंध के बारे में उठनेवाली हर समस्याओं को सुलझाया और मुझे प्रेरणा देने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। अतः उनके मार्गदर्शन के बिना यह शोध-कार्य असंभव ही था। इसलिए मैं उनके प्रति हमेशा कृतज्ञ रहूँगा।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष आदरणीय गुरूवर्य प्रा. डा. व्ही. के. मोरे जी ने अपने अध्ययन व्यस्तता के बावजूद मुझे अनमोल मार्गदर्शन किया है।

शिवाजी विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के भूतपूर्व विभागाध्यक्ष आदरणीय गुरूवर्य प्रा. डा. पी. एस्. पाटील जी का मार्गदर्शन भी मेरे लिए बहुत उपयोगी रहा है।

साथ ही मेरे आदरणीय गुरूवर्य एवं हिंदी विभागाध्यक्ष प्रा. डा. अर्जुन चव्हाण जी ने मेरे साथ धर्मवीर भारती के बारे में की हुई चर्चा इस शोध-कार्य के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण रही है।

इनके अलावा शिवाजी महाविद्यालय बार्शी के हिंदी विभाग के प्राध्यापक डा. संजय नवले जी ने समय-समय पर अनुसंधान विषय के बारे में की हुई चर्चा और दोस्त की हैसियत से किया हुआ मार्गदर्शन भी मेरे लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है।

इस अनुसंधान कार्य की संपन्नता के आधार में मुझे प्रेरणा देनेवाले परंम पुज्य माता-पिता, हमेशा मित्र बनकर हौसला बढ़ानेवाले मेरे दो भाई सोमनाथ (सोमेश) और शंकर तथा दादी माँ इन के प्रति मैं जीवनभर कृतज्ञ रहुँगा। साथ ही मेरे परमस्नेही अशोक बाचुळकर और गिरीश काशीद ने अपनी अध्ययन व्यस्तता में किया हुआ मार्गदर्शन और दी हुई प्रेरणा के कारण वे इस लघु शोध-प्रबंध की संपन्नता में बराबर के हिस्सेदार रहे हैं।

मित्र परिवारों में से मेरे हितचिंतकों की प्रेरणा के लिए किशोर पाटील, हनमंत शेवाळे, मनोहर भंडारे, अमोल कासार, भास्कर भवर (साहेब), संभाजी शिंदे, सुरेश शिंदे, गुंडोपंत पाटील, मिलींद साळवी, इन्नुस शेख, विजय शिंदे, विजय राऊत, मनोहर भोसले, मनोज राठोड, सुनिल साठे, संतोष पाटील, गोविंद फाळके, बापु गोडसे, मनिषा, ज्योति, बेबी, जयु आदि का मैं हार्दिक आभारी हूँ।

इस लघु शोध-प्रबंध का सही रूप में टंकन करनेवाले अल्ताफ मोमीन (कोल्हापुर) इनका भी मैं आभारी हूँ।

अंत में सभी गुरूजनों, सहृदयों एवं आत्मजनों की प्रेरणा तथा सदिच्छाओं के लिए पुनःश्च धन्यवाद।